Impact Factor (SJIF): 4.714 E-ISSN: 2583-1615

International Journal of Research in Academic World

Received: 18/January/2023 IJRAW: 2023; 2(2):84-85 Accepted: 22/February/2023

प्राचीन भारत में अशोक के धम्म की विवेचना

*[1]डॉ0 अनिल कुमार यादव

*[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, प्राचीन इतिहास, संस्कृति, पुरातत्व विभाग पी0जी0 कालेज, पट्टी, प्रतापगढ़, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य प्राचीन भारत में अशोक के धम्म का विश्लेषण करना है जिसके अन्तर्गत धम्म के द्वारा समाज में नैतिकता एवं सद्विचार का प्रसार करना था ताकि सभी वर्गों, जातियों और संस्कृतियों को एक सूत्र में बांध सके और लोग अशोक के धम्म को सरल तरीके से समझ सके।

मूल शब्दः धम्म, त्रिरत्न, अभिलेख, शिलालेख, नैतिकता।

प्रस्तावना

विश्व इतिहास में अशोक एक चक्रवर्ती सम्राट के रूप में विख्यात है। अशोक अपने सम्पूर्ण जीवन में मानव–मात्र के कल्याण एवं नैतिक उन्नति के लिए प्रयास किया। जिन सिद्धान्तों के पालन से यह नैतिक उत्थान संभव था, अशोक के लेखों में उन्हें धम्म कहा गया है। 'धम्म' संस्कृत के 'धर्म' का ही प्राकृत रूपान्तर है परन्तु सम्राट अशोक के लिए यह शब्द विशेष महत्व रखता है। अपने दूसरे स्तम्भ लेख में अशोक स्वयं प्रश्न करता है–'कियं चु धम्मे? (धम्म क्या है?) [1] दूसरे एवं सातवें स्तम्भ लेखों में इसका उत्तर स्वयं देता है। इसको हम इस प्रकार रख सकते हैं–'अपासिनवे बहुकयाने दयादाने सचे सोचये मादवे साधवे च। [2] जो निम्नवत है:–

1. अल्प पाप (अपासिनवे) है।
2. अत्यधिक कल्याण (बहुकयाने) है।
3. दया है।
4. दान है।
5. सत्यवादिता है।
6. पवित्रता (सोचये) है।
7. मृदुता (मादवे) है।
8. साधुता (साधवे) है।

आगे कहा गया है कि प्राणियों का वध न करना, जीव हिंसा न करना, माता–पिता तथा बड़ों की आज्ञा मानना, गुरुजनों के प्रति आदर, मित्र, परिचितों, संबंधियों, ब्राह्मण तथा श्रमणों के प्रति दानशीलता तथा उचित व्यवहार और दास तथा भृत्यों के प्रति उचित व्यवहार। [3] ब्रह्मगिरि शिलालेख में इन गुणों के अतिरिक्त शिष्य द्वारा गुरु का आदर भी धम्म के अंतर्गत माना गया है। तीसरे शिलालेख में अशोक ने अल्प व्यय तथा अल्प संग्रह को धम्म का अंग माना है।

अशोक ने न केवल धम्म की व्याख्या की है वरन् उसने धम्म की प्रगति में बाधक पाप की भी व्याख्या की है। इन्हें 'आसिनव' कहा गया है। आसिनव को अशोक तीसरे स्तम्भ लेख में 'पाप' कहता है। उसके अनुसार निम्नलिखित दुर्गुणों से आसिनव हो जाते हैं। [4]

1. चंडिये अर्थात प्रचण्डता
2. निठुलिये अर्थात निष्ठुरता
3. क्रोधे अर्थात क्रोध
4. इस्सा अर्थात ईर्ष्या

अतः धम्म का पूर्ण परिपालन तभी संभव हो सकता है जब मनुष्य उसके गुणों के साथ ही साथ इन विकारों से भी अपने को मुक्त रखे। धम्म के इन सिद्धान्तों के अनुशीलन करने से इस सम्बन्ध में कोई संदेह नहीं रह जाता है कि यह एक सर्वसाधारण धर्म है जिसकी मूलभूत मान्यताएं सभी सम्प्रदायों में मान्य है और जो देश–काल की सीमाओं में आबद्ध नहीं है। [5] अशोक ने अपने तेरहवें शिलालेख में लिया है–ब्राह्मण, श्रमण और गृहस्थ सर्वत्र रहते हैं और धर्म के इन आचरणों का पालन करते है।

अशोक बौद्ध धर्म का अनुयायी था। सभी बौद्ध ग्रन्थ अशोक को बौद्ध धर्म का अनुयायी बताते हैं। अशोक के बौद्ध होने के सबल प्रमाण उसके अभिलेख है। लघु शिलालेख में अशोक अपने को 'बुद्धशाक्य' कहा है। भाब्रु लघु शिलालेख में अशोक त्रिरत्न बुद्ध, धम्म और संघ में विश्वास प्रकट करता है और भिक्षु तथा भिक्षुणियों से कुछ बौद्ध ग्रन्थों का अध्ययन तथा श्रवण करने के लिए कहता है। अशोक ने राज्याभिषेक के दसवे वर्ष बोधगया की यात्रा की। बारहवे वर्ष वह निगाकि सागर गया और कनक मुनि बुद्ध के स्तूप के आकार को दुगुना किया।

महावंश तथा दीपवंश के अनुसार उसने तृतीय बौद्ध संगीति बुलाई और मोग्गलिपुत्त तिस्स की सहायता से संघ में अनुशासन और एकता लाने का सफल प्रयास किया। अशोक के सारनाथ तथा

*Corresponding Author: डॉ0 अनिल कुमार

सांची के लघुस्तम्भ लेख में संघभेद के विरुद्ध यह आदेश जारी किया गया है कि जो भिक्षु या भिक्षुणी संघ में फूट डालने का प्रयास करे उन्हें संघ से बहिष्कृत किया जाए। यह आदेश कौशांबी और पाटलिपुत्र के महामात्रों को दिया गया है। [6] अशोक बौद्ध था। वह त्रिरत्न में विश्वास करता था। किन्तु जिस धम्म के उपदेश का उसने लोगों में प्रचार किया वह सर्वसाधारण का धम्म था। वह मानव धम्म था।

अशोक का धम्म व्यवहारिक फलमूलक और अत्यधिक मानवीय था। इस धर्म के प्रचार से अशोक अपने साम्राज्य के लोगों में तथा बाहर अच्छे जीवन के आदर्श को चरितार्थ करना चाहता था। उसने अपने शासनकाल में निरन्तर यह प्रयास किया कि प्रजा के सभी वर्गों और सम्प्रदायों के बीच सहमति का आधार ढूंढा जाए और उसी सामान्य आधार के अनुसार नीति अपनाई जाए। सातवें शिलालेख में अशोक ने कहा, ''सभी सम्प्रदाय सभी स्थानों में रह सकते हैं क्योंकि सभी आत्मसंयम और भावशुद्धि चाहते हैं।'' बारहवें शिलालेख में उसे घोषणा की कि अशोक सभी सम्प्रदायों के गृहस्थ और श्रमणों का दान आदि के द्वारा सम्मान करता है। अशोक के लोगों में सहमति बढ़ाने के लिए धम्म महामात्र तथा अन्य कर्मचारियों को लगाया।

अशोक के धम्म की विवेचना करते हुए रोमिला थापर ने लिखा है कि धम्म अशोक का अपना आविष्कार था। संभव है कि इसे हिन्दू तथा बौद्ध विचारधारा से ग्रहण किया गया हो किन्तु सार रूप में यह सम्राट द्वारा जीवन पद्धति को सुझाने का एक ऐसा प्रयास था जो व्यवहारिक तथा सुविधाजनक होने के साथ–साथ अत्यधिक नैतिक भी था। इसकी उद्देश्य उन लोगों के बीच सुखद समन्वय स्थापित करना था जिनके पास दार्शनिक चिन्तन में उलझने का अवकाश ही नहीं था। [7] इस प्रकार अशोक ने धर्म को अपनाने में व्यवहारिक लाभ लेखा। इस नराधर्म या धम्म की कल्पना का दूसरा कारण था छोटी–छोटी राजनीतिक इकाइयों में बंटे साम्राज्य के विभिन्न वर्गों, जातियों और संस्कृतियों को एक सूत्र में बांधना।

अशोक के शिलालेखों में धम्म की जो बातें दी गई है उनसे स्पष्ट है कि वे पूर्ण रूप से बौद्ध ग्रन्थों से की गयी हैं। अशोक ने धम्म विजय आदर्श को अपनाया। अशोक भौतिक तथा आध्यात्मिक कल्याण के लिए प्रयत्नशील रहता है। ऐसा राजा विजय से नहीं अपितु धम्म से विजयी होता है। वह तलवार के बजाय धम्म से विजय प्राप्त करता है। वह लोगों को अहिंसा का उपदेश देता है। अशोक के धम्म की जो परिभाषा दी गयी है वह 'राहुलोवादसुत्त' से की गई है। इस सुत्त को 'गेह विजय' भी कहा गया अर्थात 'गृहस्थों के लिए अनुशासन ग्रन्थ।' उपासक के लिए परम उद्देश्य स्वर्ग प्राप्त करना था न कि निर्वाण। अशोक ने जनसाधारण के नैतिक उत्थान के लिए अपने धर्म का प्रचार किया ताकि वे ऐहिक सुख और इन जन्म के बाद स्वर्ग प्राप्त कर सके।

निष्कर्ष

उपरोक्त वर्णन से यह पता चलता है कि धम्म का स्वरूप व्यापक था। अशोक के धम्म के माध्यम से आम प्रजा में नैतिकता का विस्तार करना चाहता था ताकि लोगों में सद्भावना व राष्ट्रीय एकता का विस्तार हो सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. श्रीवास्तव, के0सी0 प्राचीन भारत का इतिहास, प्रकाशन यूनाइटेड बुक डिपो, 21 यूनिवर्सिटी रोड इलाहाबाद, पेज, 185, 2003
2. श्रीवास्तव, के0सी0 प्राचीन भारत का इतिहास, प्रकाशन यूनाइटेड बुक डिपो, 21 यूनिवर्सिटी रोड इलाहाबाद, पेज, 186, 2003
3. डी0एन0 झा एवं के0एल0 श्रीमाली–प्राचीन भारत का इतिहास, प्रकाशन हिन्दी माध्यम का यन्विय निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय 1981, (प्रथम संस्करण), पृष्ठ 182
4. आसिनव गामीनि नाम अथ चंडिये निठलये क्रोधे माने इस्सा... तृतीय स्तम्भ लेख।
5. डी0एन0 झा एवं के0एल0 श्रीमाली–प्राचीन भारत का इतिहास, प्रकाशन हिन्दी माध्यम का यन्विय निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय 1981 (प्रथम संस्करण), पृष्ठ 183
6. डी0एन0 झा एवं के0एल0 श्रीमाली–प्राचीन भारत का इतिहास, प्रकाशन हिन्दी माध्यम का यन्विय निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय 1981 (प्रथम संस्करण) पृष्ठ 183
7. रोमिला, थापर–अशोक और मौर्य साम्राज्य का पतन, प्रकाशक–ग्रंथ शिल्पी (इण्डिया) प्राइवेट लिमिटेड जी–82 विजय चौक, लक्ष्मीनगर नई दिल्ली, पृष्ठ 149।
8. न भूत दुव धममहामाता नामं त मया त्रैदसवासाभिसितेन धंमहामाता कता।
9. रोमिला, थापर–अशोक और मौर्य साम्राज्य का पतन, प्रकाशक–ग्रंथ शिल्पी (इण्डिया) प्राइवेट लिमिटेड जी–82 विजय चौक, लक्ष्मीनगर नई दिल्ली, पृष्ठ 175